

GDP की अपर्याप्त रकिवरी

यह एडिटरियल 07/06/2023 को 'इंडियन एक्सप्रेस' में प्रकाशित **“Latest GDP estimates”** लेख पर आधारित है। इसमें विकास के अंतरहित चालकों की गतिपर्याप्त प्रबल नहीं होने और चुनौतियों का समाधान करने की आवश्यकता के संबंध में चर्चा की गई है।

प्रलमिस के लिये:

जी.डी.पी., मनरेगा, प्रतियक्त जी.डी.पी., नविश-जी.डी.पी. अनुपात, **करय शक्ति**

मेन्स के लिये:

आर्थिक विकास की चुनौतियाँ, अनौपचारिक क्षेत्र की औपचारीकरण, समावेशी विकास

भारत के नवीनतम सकल घरेलू उत्पाद (GDP) अनुमानों ने सबसे आशावादी अनुमानों को भी पार कर लिया है, जिससे चालू वित्तीय वर्ष के लिये आर्थिक विकास अनुमानों में ऊर्ध्वगामी संशोधन किये गए हैं। भारत के जी.डी.पी. अनुमान महामारी के दौरान अनुभव किये गए गिरावटों से उबरने का संकेत दे रहे हैं।

हालाँकि ग्रामीण मांग, वनरिमाण प्रदर्शन, अनौपचारिक क्षेत्र के विकास, नविश पैटर्न, उदासीन घरेलू व्यय आदि में व्याप्त चुनौतियों के साथ रकिवरी पर्याप्त नहीं है और आर्थिक हानि देश की विकास संभावनाओं के लिये चुनौतियाँ पेश कर रही है। सतत एवं संतुलित आर्थिक विकास प्राप्त करने के लिये इन वरिधाभासों को सुलझाना अत्यंत आवश्यक है।

जी.डी.पी. रकिवरी चुनौतीपूर्ण क्यों है?

- कृषिविकास के बावजूद ग्रामीण मांग में कमी:
 - ग्रामीण बाजारों का पछिड़ापन:
 - कृषि क्षेत्र में मजबूत वृद्धि के बावजूद ग्रामीण मांग कमजोर बनी हुई है, जहाँ ग्रामीण बाजारों में 'वॉल्यूम ग्रोथ' (volume growth) सुस्त बनी हुई है।
 - प्रतियक्त आय में गिरावट:
 - कृषि क्षेत्र में श्रमिकों की बढ़ती भागीदारी के परिणामस्वरूप प्रतियक्त आय में कमी आई है।
 - गैर-कृषि क्षेत्र का कमजोर प्रदर्शन:
 - गैर-कृषि क्षेत्र, जो ग्रामीण घरेलू आय में महत्वपूर्ण योगदान देता है, संभवतः कमजोर प्रदर्शन कर रहा है।
 - **मनरेगा** (MGNREGA) के तहत परिवारों द्वारा कार्य की मांग में हालाँकि कोविड वर्षों के दौरान गिरावट देखी गई थी, यह महामारी-पूरव स्तरों से पर्याप्त ऊपर बनी हुई है।
 - वर्ष 2022-23 में इस कार्यक्रम के अंतर्गत 8.76 करोड़ व्यक्तियों को काम मिला (वर्ष 2019-20 में 7.88 करोड़ और वर्ष 2018-19 में 7.77 करोड़ व्यक्तियों की तुलना में)।
- औद्योगिक क्षेत्र में मंदी और वनरिमाण प्रदर्शन:
 - औद्योगिक क्षेत्र में मंदी:
 - औद्योगिक क्षेत्र, विशेष रूप से वनरिमाण क्षेत्र में उल्लेखनीय मंदी आई है।
 - चौथी तमिही में टर्न-अराउंड (turnaround) के बावजूद पूरे वर्ष के लिये वनरिमाण क्षेत्र की वृद्धि मात्र 1.3% रही।
- गैर-कृषि क्षेत्र के अंतर्गत अनौपचारिक क्षेत्र रोजगार में वृद्धि:
 - अनौपचारिक क्षेत्र रोजगार:
 - गैर-कृषि क्षेत्र के अंतर्गत स्वामित्व और साझेदारी उद्यमों (अनौपचारिक क्षेत्र की फर्मों) में संलग्न श्रमिकों की हसिसेदारी **68.2% (वर्ष 2017-18) से बढ़कर 71.8% (वर्ष 2021-22)** हो गई।
 - अनौपचारिक क्षेत्र रोजगार में वृद्धि अर्थव्यवस्था को औपचारिक बनाने और रोजगार अवसरों को बढ़ावा देने के सरकारी प्रयासों से भनिन तस्वीर पेश करती है।
- नविश गतिविधि और चालू खाता गतिशीलता:
 - स्वस्थ नविश वृद्धि:

- नविश-जी.डी.पी. अनुपात के 29.2% (2022-23) तक पहुँचने के साथ नविश गतिविधि में स्वस्थ प्रवृत्ति नज़र आई।
- **घरेलू क्षेत्र द्वारा प्रेरित विकास:**
 - नविश अनुपात में दो-तहियाँ वृद्धि घरेलू क्षेत्र द्वारा संचालित थी, जिसके बाद सार्वजनिक क्षेत्र और नज़ी क्षेत्र की फर्मों का योगदान रहा।
- **चालू खाता अधिशेष की संभावना:**
 - हाल के जी.डी.पी. आँकड़े **चालू खाता अधिशेष** (current account surplus) या न्यूनतम घाटे की संभावना प्रकट करते हैं, जो बचत के सापेक्ष कमज़ोर नविश मांग का संकेत देते हैं।
- **कमज़ोर घरेलू व्यय और मुद्रास्फीति का प्रभाव:**
 - **हार्ड-एंड खर्च बनाम समग्र घरेलू व्यय:**
 - हार्ड-एंड वस्तुओं एवं सेवाओं पर खर्च बढ़ा है, जबकि निम्न एवं मध्यम आय वाले परिवारों द्वारा कम खर्च करने के कारण समग्र घरेलू व्यय में गिरावट बनी हुई है।
 - **निम्न आय वृद्धि:**
 - उत्पादक रोज़गार के सीमति अवसर और निम्न आय वृद्धि ने कमज़ोर घरेलू व्यय में योगदान दिया है।
 - **मुद्रास्फीति द्वारा कर्य शक्ति का क्षरण:**
 - स्तरि मुद्रास्फीति परिवारों की **कर्य शक्ति** को कम करती है और उपभोग को संकुचित करती है।
- **आर्थिक हानि और असमान रकिवरी:**
 - वास्तविक विकास की कमी:
 - महामारी से पहले की वृद्धि की तुलना में, भारतीय अर्थव्यवस्था की वास्तविक वृद्धि वर्तमान स्तरों से कम बनी हुई है, जो आर्थिक हानि को दर्शाती है।

आर्थिक विकास के प्रमुख चालक कौन-से हैं?

- **नविश:**
 - भौतिक अवसंरचना, मशीनरी, प्रौद्योगिकी और मानव पूंजी में नविश आर्थिक विकास का एक प्रमुख चालक है।
 - इससे उत्पादन क्षमता, दक्षता और नवाचार में वृद्धि होती है, जिसके परिणामस्वरूप उच्च उत्पादकता और उत्पादन की स्थिति बनती है।
- **प्रौद्योगिकी और नवाचार:**
 - तकनीकी प्रगति और नवाचार उत्पादकता में सुधार, नए उद्योगों एवं बाज़ारों के सृजन और प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाने के रूप में आर्थिक विकास को प्रेरित करते हैं।
 - अनुसंधान एवं विकास (R&D) और प्रौद्योगिकी अंगीकरण में नविश आर्थिक विस्तार में योगदान देता है।
- **मानव पूंजी विकास:**
 - शिक्षा, प्रशिक्षण और कौशल विकास आर्थिक विकास के आवश्यक चालक हैं।
 - एक सुशिक्षित एवं कुशल कार्यबल अधिक उत्पादक, नई तकनीकों के प्रति अनुकूल और नवाचार एवं उद्यमिता को प्रेरित करने में सक्षम होता है।
- **व्यापार और वैश्वीकरण:**
 - अंतरराष्ट्रीय व्यापार और वैश्वीकरण आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
 - व्यापार बाज़ारों का विस्तार करके, विशेषज्ञता को सुगम बनाकर और संसाधनों एवं पूंजी तक पहुँच को बढ़ावा देकर उत्पादकता की वृद्धि कर सकता है, आर्थिक दक्षता को प्रेरित कर सकता है तथा रोज़गार के अवसर सृजित कर सकता है।
- **अवसंरचना विकास:**
 - आर्थिक विकास के लिये परिवहन, संचार, ऊर्जा और स्वच्छता सहित पर्याप्त अवसंरचना अत्यंत आवश्यक है।
 - सुविकसित अवसंरचना लेनदेन लागत को कम करती है, वस्तुओं एवं सेवाओं की आवाजाही को सुगम बनाती है और नविश को आकर्षित करती है।
- **संस्थागत ढाँचा:**
 - आर्थिक विकास के लिये एक सुदृढ़ एवं कुशल संस्थागत ढाँचा अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसमें वधिक शासन, संपत्ति अधिकारों की रक्षा, पारदर्शी शासन, कुशल वधिक प्रणालियाँ और उद्यमशीलता एवं नविश को बढ़ावा देने वाला व्यवसाय-अनुकूल माहौल शामिल है।
- **मैक्रोइकोनॉमिक स्थिरता:**
 - नविश, व्यापार और आर्थिक विकास के अनुकूल वातावरण को बढ़ावा देने के लिये सुदृढ़ राजकोषीय एवं मौद्रिक नीतियों, निम्न मुद्रास्फीति दर और वनिमिय दर स्थिरता के माध्यम से मैक्रोइकोनॉमिक स्थिरता को बनाए रखना महत्वपूर्ण है।
- **उद्यमिता और नवाचार:**
 - उद्यमशील गतिविधियाँ और नवाचार नए व्यवसायों, उत्पादों एवं सेवाओं का सृजन कर, रोज़गार उत्पन्न कर और प्रतिस्पर्धा एवं बाज़ार की गतिशीलता को बढ़ावा देकर आर्थिक विकास को गति प्रदान करते हैं।

संभावित समाधान

- **ग्रामीण मांग को बढ़ावा देना:**
 - विकास एवं रोज़गार के अवसरों को प्रोत्साहित करने के लिये लक्ष्य नीतियाँ एवं पहलों के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में गैर-कृषि

क्षेत्र को बढ़ावा देना।

- नविश आकर्षित करने और आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिये ग्रामीण क्षेत्रों में अवसंरचना एवं कनेक्टिविटी में सुधार करना।
- उद्यमशीलता और लघु व्यवसाय विकास को प्रोत्साहित करने के लिये ग्रामीण परिवारों एवं उद्यमियों के लिये ऋण और वित्तीय सेवाओं तक पहुँच को बढ़ाना।
- आर्थिक लाभों का समान वितरण सुनिश्चित करते हुए कृषि और गैर-कृषि क्षेत्रों के बीच आय के अंतर को दूर करने के उपाय करना।

■ **वनिर्माण क्षेत्र का पुनरुद्धार:**

- वनिर्माण को प्रोत्साहित करने के लिये क्षेत्र-वशिष्ट नीतियों को लागू करना, जैसेकर प्रोत्साहन, सरलीकृत वनियमन और कारोबार सुगमता संबंधी सुधार।
- उत्पादकता एवं प्रतस्पर्द्धात्मकता बढ़ाने के लिये वनिर्माण क्षेत्र में नवाचार, अनुसंधान एवं विकास और प्रौद्योगिकी अंगीकरण को प्रोत्साहित करना।
- श्रम बल में व्याप्त कौशल अंतराल को दूर करने के लिये कौशल विकास कार्यक्रमों को सशक्त करना और इसे वनिर्माण उद्योग की आवश्यकताओं के साथ संरेखित करना।
- नविश आकर्षित करने और औद्योगिक विकास को बढ़ावा देने के लिये सार्वजनिक-नज्दी भागीदारी एवं सहयोग को सुगम बनाना।

■ **अनौपचारिक क्षेत्र का औपचारिकरण:**

- अनौपचारिक क्षेत्र के उद्यमों की औपचारिकता को बढ़ावा देने के लिये नीतियों और कार्यक्रम पेश करना, जैसे कवित्त तक पहुँच प्रदान करना, पंजीकरण प्रक्रियाओं को सरल बनाना तथा अनुपालन के लिये प्रोत्साहन (incentives) की पेशकश करना।
- अनौपचारिक क्षेत्र के श्रमिकों की आय सुरक्षा और समग्र कल्याण में सुधार के लिये सामाजिक सुरक्षा जाल को बढ़ाना।
- व्यापार विकास सहायता, प्रशिक्षण और बाजारों तक पहुँच प्रदान कर औपचारिक क्षेत्र की ओर संक्रमण हेतु अनौपचारिक उद्यमों के लिये एक सक्षमकारी माहौल का संपोषण करना।

■ **आय असमानता को संबोधित करना और घरेलू व्यय को बढ़ावा देना:**

- आय के पुनर्वितरण और धन असमानताओं को कम करने के लिये प्रगतिशील कराधान नीतियों को लागू करना।
- नमिन आय वाले परिवारों और कमजोर समूहों को सहायता प्रदान करने के लिये सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों और सुरक्षा तंत्रों को बढ़ाना।
- व्यक्तियों को सशक्त बनाने और उनकी रोजगार क्षमता में सुधार के लिये शिक्षा एवं कौशल विकास में नविश बढ़ाना।
- परिवारों की क्रय शक्ति की रक्षा के लिये प्रभावी मौद्रिक एवं राजकोषीय नीतियों के माध्यम से मुद्रास्फीति के दबावों का सामना करना।

■ **नगिरानी एवं मूल्यांकन:**

- कार्यान्वयन नीतियों एवं हस्तक्षेपों की प्रभावशीलता की नगिरानी एवं मूल्यांकन के लिये सुदृढ़ तंत्र स्थापित करना।
- प्रमुख आर्थिक संकेतकों पर नीतित उपायों के प्रभाव का नयिमति रूप से आकलन करना और वांछित परिणाम सुनिश्चित करने के लिये आवश्यक समायोजन करना।
- नीति निर्माण और कार्यान्वयन को सूचना-संपन्न बनाने के लिये अनुसंधान एवं डेटा-संचालित निरणयन को प्रोत्साहित करना।

अभ्यास प्रश्न: सतत् और समावेशी आर्थिक विकास प्राप्त करने में भारतीय अर्थव्यवस्था के समक्ष वदियमान प्रमुख चुनौतियों की चर्चा कीजिये।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्षों के प्रश्न (PYQs)

????????

प्रश्न: भारतीय अर्थव्यवस्था के संदर्भ में नमिनलखिति कथनों पर वचिर कीजिये: (2015)

1. पछिले दशक में वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धिदर में लगातार वृद्धि हुई है।
2. बाजार मूल्य पर सकल घरेलू उत्पाद (रुपए में) में पछिले एक दशक में लगातार वृद्धि हुई है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों
- (d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर: (b)

व्याख्या:

- सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domestic Product- GDP) किसी देश की सीमाओं के भीतर एक वशिष्ट समय अवधि, आम तौर पर 1 वर्ष में उत्पादित सभी अंतम वस्तुओं और सेवाओं का मौद्रिक मूल्य है। यह एक राष्ट्र की समग्र आर्थिक गतिविधि का एक व्यापक माप है।
- वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद एक मुद्रास्फीति-समायोजित उपाय है जो किसी दिये गए वर्ष में अर्थव्यवस्था द्वारा उत्पादित सभी वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य को आधार-वर्ष की कीमतों में व्यक्त करता है।

- वास्तविक GDP की वृद्धि दर पछिले एक दशक में लगातार नहीं बढ़ी है। विभिन्न अंतरराष्ट्रीय घरेलू आर्थिक दबावों के कारण इसमें उतार-चढ़ाव आया है। **अतः कथन 1 सही नहीं है।**
- भारत के बाज़ार मूल्यों पर सकल घरेलू उत्पाद पछिले एक दशक में वर्ष 2005 में लगभग 900 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर वर्ष 2015 में 2.1 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया है। वर्ष 2020 तक, भारत का सकल घरेलू उत्पाद 2.63 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर था। **अतः कथन 2 सही है।**

प्रश्न. किसी देश के सकल घरेलू उत्पाद के अनुपात में कर में कमी नमिनलखिति में से किसको दर्शाती है? (2015)

1. धीमी आर्थिक विकास दर
2. राष्ट्रीय आय का कम न्यायसंगत वितरण

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर का चुनिये:

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों
- (d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर: (a)

व्याख्या:

- कर GDP अनुपात किसी देश के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) के सापेक्ष उसके कर राजस्व का अनुपात है। उदाहरण के लिये, यदि भारत का टैक्स-टू-GDP अनुपात 20% है, तो इसका मतलब है कि सरकार को अपने सकल घरेलू उत्पाद का 20% कर योगदान के रूप में मलित है।
- कर GDP अनुपात का उपयोग वर्ष-दर-वर्ष कर प्राप्तियों की तुलना करने के लिये किया जाता है। चूँकि आर्थिक गतिविधि से संबंधित है इसलिये अनुपात अपेक्षाकृत स्थिर रहना चाहिये। जब सकल घरेलू उत्पाद (GDP) बढ़ता है, तो कर राजस्व में भी वृद्धि होनी चाहिये।
- आर्थिक मंदी के परिणामस्वरूप विकास की दर कम होती है, जहाँ आमतौर पर बेरोज़गारी बढ़ती है और उपभोक्ता खर्च घटता है। नतीजतन, टैक्स-टू-GDP अनुपात में गिरावट आती है। **अतः कथन 1 सही है।**
- राष्ट्रीय आय का असमान वितरण सीधे तौर पर GDP अनुपात में कर में कमी से संबंधित नहीं है।
- राष्ट्रीय आय और संसाधन आवंटन का समान वितरण आमतौर पर किसी देश की आर्थिक योजना पर निर्भर करता है। **अतः कथन 2 सही नहीं है।**
- **अतः विकल्प (a) सही है।**

??????

प्रश्न. उच्च संवृद्धि के लगातार अनुभव के बावजूद, भारत के मानव विकास के नमिनतम संकेतक चल रहे हैं। उन मुद्दों का परीक्षण कीजिये जो संतुलित और समावेशी विकास को पकड़ में आने नहीं दे रहे हैं। (2019)

प्रश्न. संभावित सकल घरेलू उत्पाद को परभाषित करते हुए इसके निर्धारकों की व्याख्या कीजिये। वे कौन-से कारक हैं जो भारत को अपनी संभावित GDP को साकार करने से रोक रहे हैं? (2020)

प्रश्न. वर्ष 2015 से पहले और वर्ष 2015 के बाद भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की कंप्यूटिंग पद्धतियों के बीच अंतर को स्पष्ट कीजिये। (2021)